

①

Prof. Pankaj Kumar Gupta  
Assistant Professor (Economics)  
R.B.G.R. College, Maharajganj

TDC-II Eco (Hons.)  
Paper-III Monetary Eco.  
Group B - Module-4  
Basic concept of Money

Topic - money meaning and functions.

मुद्रा का अर्थ एवं कार्य

वर्णनात्मक परिभाषाएँ - मुद्रा के कार्यों का वर्णन करने वाली परिभाषाएँ वर्णनात्मक या कार्यवाहक परिभाषाएँ कही जा सकती हैं। फ्रांसिस वाकर, हार्टले विदर्स, सिपविक द्वारा इस प्रकार की परिभाषाएँ दी गई हैं। वाकर के अनुसार, "मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करे।"

वैधानिक परिभाषाएँ (Legal Definitions) - वैधानिक विचार के अनुसार किसी भी वस्तु के मुद्रा होने के लिए वैधानिक मान्यता जरूरी है। मुद्रा वही वस्तु है जिसे सरकार मुद्रा घोषित करती है और प्रत्येक व्यक्ति उसे स्वीकार करने के लिए बाध्य है। इस विचार के मुख्य समर्थक जर्मनी के प्रो. नैप तथा ब्रिटीश अर्थशास्त्री हॉट्टे हैं। नैप के अनुसार, "कौई भी वस्तु जो राज्य द्वारा मुद्रा घोषित कर दी जाती है, मुद्रा

(2)

कही जाती है।

सामान्य स्वीकृति पर आधारित परिभाषाएँ (Definition based on General Acceptability) — सामान्य स्वीकृति मुद्रा का एक आवश्यक गुण है। इसको आधार मानते हुए अनेक परिभाषाएँ दी गई हैं। रॉबर्टसन, मार्शल, पीगू, सेविगमैन, कोल, केन्स आदि ने भी इस प्रकार की परिभाषाएँ दी हैं। ब्राउथर के शब्दों में, "मुद्रा की परिभाषा किसी ऐसी वस्तु के रूप में की जा सकती है जो विनिमय के माध्यम के रूप में सामान्यतया स्वीकार की जाती है और साथ ही मूल्य मापक तथा मूल्य संचय का कार्य करती है।"

### मुद्रा के कार्य (Functions of Money)

किन्तु ने इन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया है—

- (1) मुख्य अथवा प्राथमिक कार्य (Primary functions)
- (2) सहायक कार्य (Secondary functions)
- (3) आकस्मिक कार्य (Contingent functions)

(क) प्राथमिक कार्य — प्राथमिक कार्य मुद्रा के ऐसे कार्य हैं जिन्हें आधारभूत कार्य, अनिवार्य कार्य तथा मौलिक



(3)

कार्य भी कहा जाता है, क्योंकि इन कार्यों को मुद्रा ने प्रत्येक काल, प्रत्येक देश तथा प्रत्येक स्थिति में किया है चाहे इसका निजी स्वरूप कुछ भी रहा हो।

(1) विनिमय का माध्यम - चूंकि मुद्रा में सामान्य स्वीकृति का गुण होता है, अतः यह विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करती है। विनिमय कार्य दो भागों में बँटता है प्रथम - वस्तु तथा सेवा को मुद्रा में बदलना जिसे विप्रेय कहते हैं; दूसरे मुद्रा के बदले अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ अथवा सेवाएँ प्राप्त करना जिसे क्रय कहते हैं। वर्तमान युग में सम्पूर्ण विनिमय मुद्रा के माध्यम से ही होता है।

(2) मूल्य मापक (Measures of Value) - विभिन्न वस्तुओं तथा सेवाओं का मूल्यमापन मुद्रा के मापदंड द्वारा ही किया जाता है और इसी आधार पर विनिमय - अनुपात का निर्धारण होता है। मुद्रा के रूप में व्यक्त किया गया मूल्य कीमत कहलाता है।

(ख) सहायक अथवा गौण कार्य (Secondary functions) - मुद्रा के कुछ कार्य ऐसे हैं जो प्राथमिक कार्यों के सहायक हैं और जिनका महत्व अर्थव्यवस्था

(4)

के विकास के साथ-साथ बढ़ता रहा है। इस श्रेणी में तीन कार्यों का उल्लेख किया जाता है —

- (1) स्थगित भुगतानों का आधार
- (2) मूल्य संचय का आधार
- (3) मूल्य हस्तान्तरण का साधन

(ग) आकस्मिक कार्य (Contingent functions) —  
किनारे के अनुसार प्रत्येक उन्नत अर्थव्यवस्था में मुद्रा मुख्यतया सहायक कार्यों के अतिरिक्त चार आकस्मिक कार्य भी करती है, जो निम्नलिखित हैं —

- (1) सामाजिक आय का वितरण
- (2) विभिन्न खर्चों की सीमान्त उपयोगिता में समानता
- (3) साख का आधार
- (4) बैंक को एक सामान्य रूप देना।

(घ) अन्य कार्य —

- (1) तरलता दायक
- (2) निर्णय वाहक
- (3) शोधनक्षमता संचक।

End